21-06-12

कीटों की पाठशाला

किसान पाठशाला के दौरान कपास की फसल में कीटों की पहचान करते किसान।

देश की आर्थिक रीढ़ को मजबूत करने के लिए यहां दी जाती है कीटों की तालीम

नरेंद्र कुंडू

जींद। जींद जिले के निडाना गांव में चल रहे कीट साक्षरता केंद्र में पेड़ पर लकड़ी का बोर्ड लगाया जाता है इस पाठशाला के कीट कमांडों किसानों का मुख्य उद्देश्य कीटनाशकों के प्रयोग को कमकर मनुष्य की थाली को जहर मुक्त करना है।

अपने आप में किसानों द्वारा शुरू की गई अनोखी पहल है। कृषि अधिकारी भी इन्हें अपना रोल मॉडल मानकर यहां प्रशिक्षण लेने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं।

ग्रुप बनाकर करते हैं तैयारी: केंद्र पर किसान चार-चार किसानों के अलग-अलग ग्रुप बनाते हैं और फिर खेत को अलग-अलग भागों में बांट दिया जाता है। किसान ग्रुप अनुसार फसल में घुसकर लेंसों की सहायता से पौधों के पत्तों पर मौजूद कीटों की पहचान कर उसके जीवन चक्र के बारे में जानकारी जुटाते हैं। उनकी तादाद का पूरा लेखा-जोखा कागज पर तैयार करते हैं। कीट प्रबंधन के बारे में बात की जाए तो कृषि विज्ञानिकों के पास भी इनके सवालों का तोड़ नहीं है।

मनोरंजन का भी रखते हैं खयाल: किसान पाठशाला के दौरान खूब मेहनत करते हैं, लेकिन साथ-साथ खाने-पीने व मनोरंजन का पूरा ध्यान रखते हैं। सप्ताह के हर मंगलवार को लगने वाली इस पाठशाला में वे हर बार दूसरे किसान को खाने-पीने के सामान की व्यवस्था की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। वह किसान अपने घर से सभी किसानों के लिए हलवा, दलिया या अन्य प्रकार का व्यंजन तैयार करवाकर लाता है। उब ना जाएं इससे बचने के लिए बीच-बीच में चुटकले के माध्यम से मनोरंज करते हैं।

हाईटेक हैं किसान: इस केंद्र के किसान पूरी तरह से हाईटेक हो चुके हैं। खेत से हासिल किए गए अपने अनुभवों को ये ब्लॉग या फेसबुक के माध्यम से अन्य लोगों के साथ साझा करते हैं। अपना खेत अपनी पाठशाला, कीट साक्षरता केंद्र, महिला खेत पाठशाला, चौपटा चौपाल, निडाना गांव का गौरा, कृषि चौपाल, प्रभात कीट पाठशाला सहित एक दर्जन के लगभग ब्लॉग बनाए हुए हैं और इन पर ये किसान पूरी ठेठ हरियाणवी भाषा में अपने विचार प्रकट करते हैं।

26-06-12

पहचान बना चुकी है। गाइया मंत्री गुलाब नबी आजाद करेंगे। फोन चोरी कर लिए।

18 सप्ताह तक चलेगा अध्ययन और 19वें सप्ताह में पंचायत सुनाएगी फैसला

खाप दिलाएंगी पेस्टीसाइड से निजात

नरेंद्र कुंडू

जींद। फतवे जारी करने के लिए बदनाम प्रदेश की सर्व खाप पंचायतें अब पेस्टीसाइड के खिलाफ मोर्चा खोलने जा रही है। पिछले 40-45 वर्षों से कीटों व किसानों के बीच चल रहे झगड़े को निपटाने के लिए सर्व खाप पंचायत द्वारा अनोखी पहल की गई है। कीटों व किसानों की इस आपसी लड़ाई से धरती पर मौजूद अन्य जीवों को हो रहे नुकसान को रोकने के लिए खाप पंचायतों ने हस्तक्षेप किया है। खाप पंचायत का प्रतिनिधिमंडल सप्ताह के हर मंगलवार को निडाना के कीट साक्षरता केंद्र पर पहुंचकर दोनों पक्षों की बहस सुनेगा। यह सिलसिला लगातार 18 सप्ताह तक चलेगा और 19वें सप्ताह में प्रदेश के सर्व खाप पंचायत के प्रतिनिधि एकत्रित होकर अपना फैसला सुनाएंगे।

फतवे जारी करने के लिए जानी जाने वाली प्रदेश की सर्व खाप पंचायतों ने पुरानी से पुरानी रंजीश पर समझौते की मोहर लगाकर आपसी भाईचारे को कायम रखने का काम किया है। आपसी भाईचारे को कायम रखने वाली ये खाप पंचायतें अब एक अनोखी मुहिम का हिस्सा बनने जा रही हैं। इस मुहिम के तहत खाप पंचायतें धरती पर मौजूद जीवों की जिंदगी को बचाने की भूमिका में नजर आएंगी। इसके लिए कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों ने सर्व खाप पंचायतों को चिट्ठी डालकर कीटों व किसानों के बीच चली आ रही कीट मित्र किसानों की मांग को देखते हुए खर्व खाप के प्रतिनिधियों ने जीवरक्षक इस मुहिम में अपना योगदान देने के निर्णय पर मोहर लगा दी है।

पहली बैठक में खाप पंचायतों की ओर से ये प्रतिनिधि लेंगे भाग: कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों द्वारा सर्व खाप पंचायतों को चिट्ठी डालने के बाद खाप पंचायतों के प्रतिनिधियों ने उनकी मांग पर सहमती जताई है। मंगलवार से शुरू होने वाली इस बैठक में नैन खाप के मुखिया नफे सिंह नैन, कंडेला खाप के प्रधान टेकराम कंडेला, बराह कलां बाहरा के प्रधान कुलदीप सिंह ढांडा, दाहड़न खाप से देवा सिंह, नरवाना खाप से अमृतलाल चोपड़ा, नौगामा खाप से कुलदीप सिंह रामराये तथा सर्व खाप पंचायत की महिला विंग की प्रधान प्रो. संतोष दहिया सर्व खाप पंचायत की पहली बैठक में प्रतिनिधित्व करेंगी।

जैविक खेती को मिलेगा बल

निडाना गांव स्थित कीट साक्षरता केंद्र के किसान मनुष्य की थाली को जहर मुक्त करने के लिए पिछले कई वर्षों से कीटनाशक रहित खेती को बढ़ावा देने के लिए मुहिम शुरू किए हुए हैं। इस मुहिम को धरातल पर उतारने के लिए कीट मित्र किसानों ने फसल में मौजूद शाकाहारी व मासाहारी कीटों को अपना हथियार बनाया है। ये कीट मित्र किसान अन्य किसानों को भी फसल में मौजूद कीटों की पहचान करने तथा उनके जीवनचक्र को समझने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। सर्व खाप पंचायतों द्वारा इस मुहिम में शामिल होने के बाद उनकी इस मुहिम को बल मिलेगा और किसानों में जैविक खेती के प्रति रुझान बढ़ेगा।

किसान अधिक से अधिक उत्पादन लेने की होड़ में अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। जो फसल में मौजूद शाकाहारी व मासाहारी कीटों तथा मनुष्य के लिए नुकसादायक है। पिछले कई वर्षों से किसानों में कीटनाशकों के प्रयोग को लेकर संशय बरकरार है। जिस कारण किसान जानकारी के अभाव में कंपनियों के बहकावे में आकर लुट रहे हैं। इस संशय को दूर करने तथा किसानों का उचित मार्गदर्शन करने के लिए कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों के अनुरोध पर इस मुहिम की शुरुआत की गई है। प्रदेश की सर्व खाप पंचायत के इतिहास में यह एक अनोखी पहल है।

कुलदीप सिंह ढांडा संयोजक समन्वय कमेटी, सर्वजातिय सर्व खाप महापंचायत, हरियाणा

27-06-12 H

नई पहल

कीट साक्षरता केंद्र के किसानों ने बैठक में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न देकर किया स्वागत

कीट प्रबंधन के लिए आगे आई सर्व खाप पंचायत

नरेंद्र कुंडू

जींद। आपने खाप पंचायतों को सामाजिक तानेबाने को बनाए रखने के लिए झगड़े निपटाते देखा होगा। अब खाप पंचायतें पिछले 40-45 वर्षों से कीटों व किसानों के बीच चले आ रहे झगड़े को निपटाने में सहयोग करेंगी। निडाना गांव स्थित कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों के आह्वान पर मंगलवार को निडाना गांव के जोगेंद्र मलिक के खेत पर एक पंचायत का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता दाढ़न खाप के प्रधान देवा सिंह ने की तथा संचालन बराह कलां बाहरा के प्रधान कुलदीप सिंह ढांडा ने किया। पंचायत में निर्णय लिया गया कि कीटों व किसानों के इस झगड़े को निपटाने के लिए सप्ताह के हर मंगलवार को सर्व खाप पंचायत की ओर से एक पंचायत का आयोजन किया जाएगा। 19वीं बैठक में सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत बुलाकर फैसला सुनाएंगे। कीट साक्षरता केंद्र के किसानों ने बैठक में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों का हथजोड़े (प्रेइंगमेंटीस) कीट का स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया।

सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत द्वारा आयोजित पंचायत में कीटों की तरफ से पक्ष रखते हुए किसान रणबीर मलिक ने कहा कि आज किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग से दूध, पानी, सब्जी व अन्य खाद्य पदार्थों सहित सब कुछ जहरीला होता जा रहा है। मलिक ने कहा कि किसान ज्ञान के अभाव के कारण फसल में मौजूद कीटों को ही अपना दुश्मन समझते हैं, जबकि वास्तविकता इसके विपरित है। फसल में शाकाहारी व मासाहारी दो प्रकार के कीट होते हैं।

पंचायत प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न भेंट करते कीट साक्षरता केंद्र के किसान।

मलिक ने कहा कि 2001 में जब बीटी कपास में अमेरिकन सुंडी आई तो कोई भी कीटनाशक उस पर काबू नहीं पा सका। खुद कृषि वैज्ञानिक यह मानते हैं कि कीटनाशकों के प्रयोग से सिर्फ सात प्रतिशत ही रिकवरी होती है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सोध से यह साबित हो चुका है कि कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से हमारा खानपान तो जहरीला हुआ ही है साथ-साथ फसलों में 95 प्रतिशत नुकसान भी बढ़ा है। मलिक ने कहा कि वे खुद पिछले सात साल से देसी कपास की खेती कर रहे हैं और इन सात सालों के दौरान उन्होंने एक बार भी अपनी फसल में कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया है। इगराह से आए मनबीर रेढ़ू ने कहा कि वह पिछले 5 वर्षों से कीटनाशक रहित खेती कर रहे हैं और उसे हर बार अच्छा उत्पादन मिल रहा है। कीट साक्षरता केंद्र के संचालक डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों के रिकॉर्ड के अनुसार 14 लाख किस्म के कीट हैं। जिनमें तीन लाख 8 हजार शाकाहारी व साढ़े चार लाख किस्म के मासाहारी कीट हैं। इन कीटों के पालन के लिए तीन लाख 65 हजार किस्म के पौधे धरती पर मौजूद हैं।

कीट का बही खाता हो रहा है तैयार

कीटों व किसानों के इस झगड़े में पंचायत सही न्याय कर सके इसके लिए कीट साक्षारता केंद्र के किसानों द्वारा पूरी योजना तैयार की गई है। पंचायत के समक्ष कीटों के पक्ष में सभी साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए किसानों के 5 ग्रुप बनाए गए हैं। कीट प्रबंधन के मास्टर ट्रेनर को प्रत्येक ग्रुप का लीडर बनाया गया है। प्रत्येक ग्रुप 10-10 पौधों की गिनती करता है और एक पौधे पर मौजूद सभी पत्तों व उन पर मौजूद कीटों की पहचान कर उनका आंकड़ा तैयार करता है। सभी ग्रुपों द्वारा गिनती की जाने के बाद उनका अनुपात निकालकर कीट बही-खाते में दर्ज किया जाता है। मंगलवार को तैयार की गई रिपोर्ट में किसानों ने कपास की फसल में मौजूद रस चुसने वाली सफेद मक्खी 1.3 अनुपात, हरा तेला 0.5 व चूरड़ा 1.64 अनुपात तथा शाकाहारी कीटों में ढाकू बुगड़ा 0.5 और मकड़ी 0.40 के अनुपात में मौजूद है। डा. दलाल ने कहा कि अभी ये कीट फसल को नुकसान पहुंचाने की स्थित में नहीं हैं।

27-06-12

आज समाज

वर्ष-6, अंक-177, हिसार, पृष्ठ-4, बुधवार, 27 जून 2012, शक संवत 1934, आषाढ़ शुक्ल पक्ष 8, आषाढ़ मास की 14 प्रविष्टे, 6 शावान हिजरी 1433, अष्टमी, मूल्य 1/-

02 नशा मुक्ति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

जींद

आशा वर्करों को जच्चा-बच्चा देखभाल की दी जानकारी 03

पेस्टीसाइड पर गहन मंथन में जुटी खाप महापंचायत

■ 18 बैठकों में गहन मंथन के बाद महापंचायत लेगी ऐतिहासिक फैसला

नरेंद्र कुंडू

जींद। कीटों व किसानों के झगड़े का निपटारा करने के लिए सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत द्वारा शुरू की गई मुहिम पूरे देश की पंचायतों के लिए एक मिशाल कायम करेगी। अपने-आप में यह एक अनोखी मुहिम है।

कीटों व किसानों के बीच में दशकों से चली आ रही लड़ाई कोई आम लड़ाई नहीं है। अगर समय रहते इसे रोका नहीं गया तो हमारी आने वाली पुश्तों को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। मंगलवार को निडाना में हुई पंचायत में पंचायत के प्रतिनिधि भी इस बात को स्वीकार कर चुके है। यह पंचायत अपने आप में एक अनोखी पंचायत थी। पंचायत प्रतिनिधियों ने खेत में कीटों का व्यवहारिक ज्ञान लेकर खेत की डोल पर बैठकर हुक्के की गुड़गुड़ाहट के साथ कीटनाशक रहित खेती के मुद्दे पर गहन मंथन किया। लगातार चार घंटे चली इस पंचायत में किसानों व पंचायत प्रतिनिधियों ने खुलकर बहस की। सर्व जातीय सर्व खाप महापंचायत की महिला विंग की प्रधान प्रो. संतोष दहिया ने कहा कि वे पिछले 5 सालों से कन्या भ्रूणहत्या रोकने के कार्य में जुटी हुई हैं और मुद्दे पर 35 हजार से ज्यादा लोगों से हस्ताक्षर करवा चुकी हैं। इस मुहिम के दौरान जब वे जनता के बीच जाती हैं तो वहां भी किसानों के शरीर पर कीटनाशकों के दुष्प्रभाव स्पष्ट नजर आते हैं। कीटनाशक के छिड़काव के दौरान सैकड़ों किसान काल का ग्रास बन

पंचायत में विचार-विमर्श करते खाप पंचायत प्रतिनिधि।

जाते हैं तो किसी किसी के अंग ही खराब हो जाते हैं। बराह कलां व बारह खाप के प्रधान कुलदीप डांडा ने कहा कि कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग से जीव जगत नष्ट हो रहा है। कीटनाशकों से हम शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों की चपेट में भी आ रहे हैं। कीटनाशकों के प्रयोग से कैंसर, खून की कमी, डिप्रेशन, हार्ट अटैक आदि खतरनाक बीमारियां हमें जकड़ती जा रही हैं, जो हमारे लिए एक चिंता का विषय है। नरवाना खाप के प्रतिनिधि अमृत लाल अरोड़ा ने कहा कि जिस तरह एक नशेड़ी व्यक्ति नशे का आदि हो जाता है, ठीक उसी तरह जमीन व किसान भी कीटनाशकों का आदि हो चुका है।

अगर कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग पर जल्द से जल्द अंकुश नहीं लगाया गया तो हमारा वंश बिल्कुल ही नष्ट हो जाएगा। दादरन खाप उचाना के प्रधान देवा सिंह, कुंडू खाप के प्रधान महाबीर सिंह कुंडू, कंडेला खाप के प्रधान टेकराम कंडेला, चहल खाप के संरक्षक दलीप सिंह चहल ने कहा कि यह मुद्दा पंचायतों के लिए चर्चा विषय है। इस पर प्रदेश ही नहीं पूरे देश की पंचायतों को ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कीटनाशक निर्माता कंपनियां झूठे व भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से किसानों को लूट रही हैं। उन्होंने कहा कि कीटनाशकों के दुष्प्रभाव को देखते हुए कई प्रदेशों में तो खुद सरकार ने ही कीटनाशकों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि हमें कीटों को मारने की जरूरत नहीं है। जरूरत है तो सिर्फ कीटों की पहचान करने व इनके जीवन चक्र के बारे में जानने की। डा. दलाल ने कहा कि कीट मित्र किसान फसल में मौजूद 109 कीटों की पहचान कर चुके हैं, जिनमें 82 कीट मांसाहारी व 27 किस्म के कीट शाकाहारी होते हैं। उन्होंने कहा कि अब यह लड़ाई सर्व खाप महापंचायत के दरबार में पहुंच चुकी है। महापंचायत लगातार 18 पंचायतों में इस मुद्दे पर गहन मंथन कर 19 वीं महापंचायत में अपना फैसला सुनाएगी।

28-06-12

अब निडाना में भी जहरमुक्त खेती

कपास के पौधों पर मौजूद कीटों की पहचान करती महिलाएं। -आज समाज

■ ऑर्गेनिक खेती के लिए पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चल रही महिलाएं

नरेंद्र कुंडू

जींद। निडाना गांव के गौरे से पेस्टीसाइड के विरोध में उठी इस आंधी को रफ्तार देने में निडाना गांव की गौरियां भी पुरुषों के बराबर अपनी भागीदारी दर्ज करवा रही हैं। निडाना गांव की महिलाएं ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। कीट मित्र किसानों ने जहां इस मुहिम को सफल बनाने के लिए खाप पंचायतों का दामन थाम है, वहीं गांव की महिलाओं ने भी इस मुहिम पर रंग चढ़ाने के लिए आसपास के गांवों की महिलाओं को जागरुक करने का बीड़ा उठाया है। अक्षर ज्ञान के अभाव का रोड़ा भी इन महिलाओं की रफ्तार को कम नहीं कर पा रहा है। पुरुषों के साथ ही इन महिलाओं ने भी इस लड़ाई में शंखनाद कर दिया है। महिलाएं घंटों कड़ी धूप के बीच खेतों में बैठकर लैंस की सहायता से कीटों की पहचान में जुटी रहती हैं। बुधवार को भी महिलाओं ने ललितखेड़ा गांव में पूनम मलिक के खेत में महिला खेत पाठशाला का आयोजन किया। इस दौरान निडाना गांव की मास्टर ट्रेनर महिलाओं ने ललितखेड़ा गांव की महिलाओं को कीटों का व्यवहारिक ज्ञान दिया। मास्टर ट्रेनर अंग्रेजो देवी, गीता मलिक ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि फसल में मांसाहारी व शाकाहारी दो प्रकार के कीट होते हैं। शाकाहारी कीट फसल के पत्तों से रस चूसकर या फसल के पत्तों को खाकर अपना जीवन चक्र चलाते हैं। मांसाहारी कीट शाकाहारी कीटों को अपना भोजन बनाते हैं और अपना जीवन यापन करते हैं। मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की इस जीवन चक्र की प्रक्रिया में किसानों को अपने आप ही लाभ पहुंचता है।

कमलेश, मीना मलिक, सुदेश मलिक ने कहा कि अगर किसान फसल में मौजूद मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की पहचान कर उनके जीवन चक्र के बारे में ज्ञान अर्जित कर ले तो किसान को कभी भी फसल में पेस्टीसाइड के इस्तेमाल की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। खेत पाठशाला के दौरान मास्टर ट्रेनर महिलाओं ने लैंस की सहायता से अन्य महिलाओं को भी कीटों की पहचान करवाई। इस दौरान महिलाओं ने फसल में शाकाहारी कीटों में सफेद मक्खी, हरा तेला, बुगड़ा तथा मासाहारी कीटों में क्राइसोपा के बच्चे, मकड़ी पदोकड़ी बिटल व दो किस्म के हथजोड़े देखे। महिलाओं को ट्रेंड करने के लिए महिलाओं के 5 ग्रुप तैयार किए गए। प्रत्येक ग्रुप में चार अनट्रेंड व एक मास्टर ट्रेनर महिलाओं को शामिल किया गया। इस अवसर पर महिलाओं ने मासाहारी व शाकाहारी कीटों पर तैयार किए गए गीत सुनाकर सबका मन मोह लिया। महिला खेत पाठशाला में मौजूद बराह कलां बारहा खाप के प्रधान कुलदीप ढाडा ने महिलाओं के गीतों पर खुश होकर सभी महिलाओं को 100-100 रुपए पुरस्कार राशि दी। महिलाओं ने लगातार साढ़े चार घंटे कीटों पर गहन मंथन किया।

बही-खाता किया जा रहा तैयार

कीट प्रबंधन की मास्टर ट्रेनर महिलाओं द्वारा कीटनाशक रहित खेती की इस मुहिम को सफल बनाने तथा कीटों का पूरा रिकार्ड तैयार करने के लिए एक बही-खाता तैयार किया जा रहा है। बही-खाते में पूरी जानकारी दर्ज करने के लिए सभी महिलाओं को अगले सप्ताह महिला खेत पाठशाला में आने से पहले अपने-अपने खेतों का पूरा निरीक्षण करने तथा कपास की फसल में मौजूद मांसाहारी व शाकाहारी कीटों का पूरा रिकॉर्ड तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया, ताकि फसल में आने वाले मासाहारी व शाकाहारी कीटों का पूरा डाटा तैयार किया जा सके।

निडाना के कीट साक्षरता केंद्र में किसान गोष्ठी का आयोजन

किसानों ने सीखा कीट प्रबंधन

आज समाज नेटवर्क

जींद। निडाना के कीट साक्षरता केंद्र के किसानों द्वारा मंगलवार को किसान जोगेंद्र मलिक के खेत में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसान गोष्ठी में कीट साक्षरता केंद्र के मास्टर ट्रेनरों द्वारा किसानों को कपास की फसल में मौजूद कीटों की पहचान करवाई तथा बिना कीटनाशकों का प्रयोग किए कीट प्रबंधन के माध्यम से ही अच्छा उत्पादन लेने के टिप्स दिए।

किसानों ने कपास की फसल में मौजूद चूरड़ा, सफेद मक्खी, हरा तेला, टीडे (ग्रास होपर), सूरा पांच प्रकार के कीटों की पहचान की। इस अवसर पर किसानों ने सुरंगी नाम एक नए कीट की खोज की। कीट साक्षरता केंद्र के मास्टर ट्रेनर रणबीर मलिक व मनबीर रेढू ने बताया कि फिलहाल कपास की फसल में चूरड़ा, सफेद मक्खी, हरातेला, टिडे व सूरा नामक पांच प्रकार शाकाहारी कीट मौजूद हैं। जिसमें सफेद मक्खी, टिडे, सूरा व हरातेला तो नामात्र की संख्या में हैं, लेकिन चूरड़ा की तादाद थोड़ी ज्यादा है। लेकिन अभी तक चूरड़ा भी फसल को किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाने की स्थिति में नहीं है। उन्होंने बताया कि किसान गोष्ठी के दौरान किसानों ने सुरंगी नामक एक नए कीट की खोज की है। यह कीट पत्ते के अंदर रहकर अपना जीवन चक्र चलाता है। जब यह खा-पीकर अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है तब पत्ते में एक छोटा सा छेद करके पत्ते से बाहर आता है। इसके बाद इसका क्यूपा बनता है, जिससे बाद में पतंगा तैयार होता है। किसान गोष्ठी के दौरान किसानों के ग्रुप बनाकर उन्हें कपास की फसल में कीटों की पहचान करवाकर व्यवहारिक ज्ञान भी दिया गया।

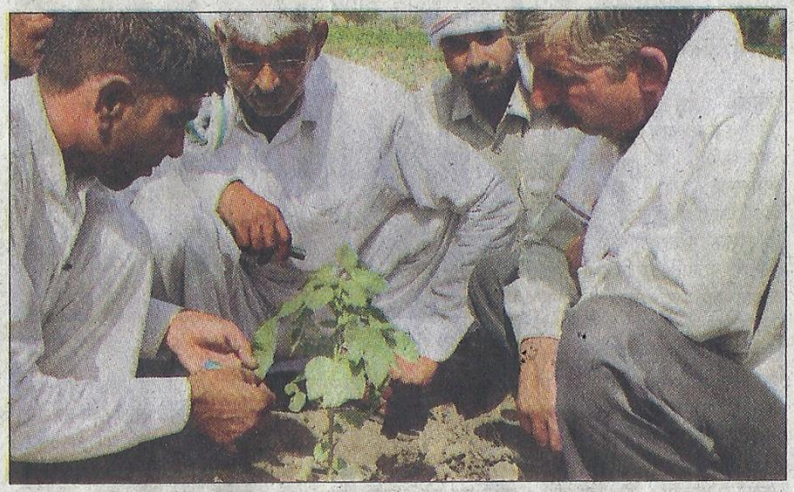

किसान पाठशाला में कपास की फसल में बैठकर कीटों की पहचान करते किसान।

कृषि विभाग के एडीओ डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि कीट शाकाहारी व मासाहारी दो प्रकार के होते हैं। लेकिन कीट का शरीर सिर, धड़ व पेट तीन भागों में बटा होता है। मुहं के हिसाब से कीट दो प्रकार के होते हैं एक जिनके डंक होता है व दूसरे वे जनके जबड़ा होता है। डंक वाले कीट फसल से रस चूस कर तथा जबड़े वाले कीट फसल के पत्तों को कुतर-कुतर कर खाते हैं। डा. दलाल ने बताया कि आमतौर पर कीट की तीन जोड़ी पैर, दो जोड़ी पंख होते हैं। इस अवसर पर खरक रामजी निवासी रोशन ने बताया कि वह फसल में की जाने वाली सभी गतिविधियों को अपनी डायरी में नोट करता है। इस मौके पर किसान गोष्ठी में ललितखेड़ा, निडाना, चाबरी, निडानी, खरकरामजी, राजपूरा भैण, अलेवा के दो दर्जन से भी ज्यादा किसान मौजूद थे।

कृषि विभाग की तरफ से 29 हजार किए जाएंगे खर्च

कीट प्रबंधन का गुर सिखाएंगी महिलाएं

आज समाज नेटवर्क

जींद। निडाना गांव की महिला खेत पाठशाला की मास्टर ट्रेनर महिलाएं अब ललितखेड़ा गांव की महिलाओं को कीट प्रबंधन का गुर सिखाएंगी। उनके कार्य को देखकर अब कृषि विभाग इनके साथ मैदान में उतर आया है। इसमें कृषि विभाग की तरफ से 29 हजार रुपए खर्च किए जाएंगे। बुधवार को उपकृषि निदेशक डा. रामप्रताप सिहाग के नेतृत्व में ललितखेड़ा गांव में महिला खेत पाठशाला का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान केंद्र उचानी (करनाल) की निदेशक डा. सरोज जयपाल ने बतौर मुख्यातिथि के तौर पर शिरकत की। इस पाठशाला में निडाना, ईगराह, ललितखेड़ा व अन्य गांवों की महिलाओं को कीट प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा। निडाना की महिलाएं इसमें प्रशिक्षक की भूमिका निभाएंगी।

इसका संचालन निडाना के कृषि विकास अधिकारी डॉ. सुरेंद्र दलाल, खंड कृषि अधिकारी डॉ. जयप्रकाश द्वारा किया जा रहा है। इसमें निडाना गांव की महिलाएं बतौर प्रशिक्षक के रूप में भाग लेंगी। डॉ. सरोज जयपाल ने फसलों पर किए जा रहे अंधाधुंध स्प्रे के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला व महिला किसानों को जागरूक किया। कृषि उप निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग ने महिला किसानों को आश्वासन दिया कि उनकी इच्छा के अनुसार महिला किसान जिस भी अनुसंधान केंद्र का भ्रमण करना चाहे, कृषि विभाग उसी राज्य या जिले में महिलाओं को अनावरण यात्रा पर भेजने का खर्च वहन करेगा।

कपास की फसल में कीटों की पहचान करती महिलाएं।

महिला किसानों ने बताया कि वे पिछले साल के लगभग 100 किस्म के मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की पहचान कर दूसरी महिलाओं को भी इनके जीवनचक्र के बारे में प्रशिक्षित कर चुकी हैं। इस अवसर पर गांव की महिलाओं ने डॉ. सरोज जयपाल को हरियाणवीं परंपरागत पोशाक दामण, कुर्ती व चुंदड़ी (तील) देकर सम्मानित किया। डॉ. सरोज ने महिलाओं से वायदा करते हुए कहा कि वे अपनी सेवानिवृत्ति के बाद इन महिलाओं से जुड़कर कीट प्रबंधन की अलख जाएंगी और जब भी वह यहां आएंगी, तब उनके द्वारा दी गई पोशाक में ही आएंगी। इस अवसर पर निडाना के किसानों ने उप कृषि निदेशक डा. आरपी सिहाग व डा.सरोज जयपाल का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।